दैनिक जागरण 10/02/2024

सीएसए में स्वामीनाथन को मिली थी मानद उपाधि

सीएसए के कृषि विज्ञानियों ने स्वामीनाथन के सुझाव पर गेंहू की बौनी प्रजाति पर अनुसंधान कर उसे किया था विकसित

जासं, कानपुर : भारत को कृषि आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाले हरित क्रांति के जनक और पद्म विभूषण प्राप्त कृषि वैज्ञानिक डा. एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलने पर सीएसए कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानिकों में खुशी का माहौल है। स्वामीनाथन के सुझाव पर ही सीएसए के कृषि विज्ञानियों ने गेंहू की बौनी प्रजाति पर अनुसंधान कर उसे विकसित किया था। दो मई 1982 में विश्वविद्यालय के पहले दीक्षा समारोह में स्वामीनाथन को मानद उपाधि मिली।

विश्वविद्यालय के निदेशक प्रोफेसर डा. विजय यादव ने बताया कि स्वामीनाथन 11 फरवरी 1989 को तीसरे दीक्षा समारोह और वर्ष 2013 में विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय गेंहू कार्यशाला में भी बतौर मुख्य अतिथि शामिल होने आए थे। कुलपति डा. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि स्वामीनाथन को हरित क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए पहचाना गया। निदेशक शोध डा. पीके सिंह, डा. आरके यादव, अधिष्ठाता कृषि संकाय डा. सीएल मौर्य, कुलसचिव डा. पीके उपाध्याय, सह निदेशक प्रसार डा. पीके राठी ने मिठाई बांटकर खुशी जताई।

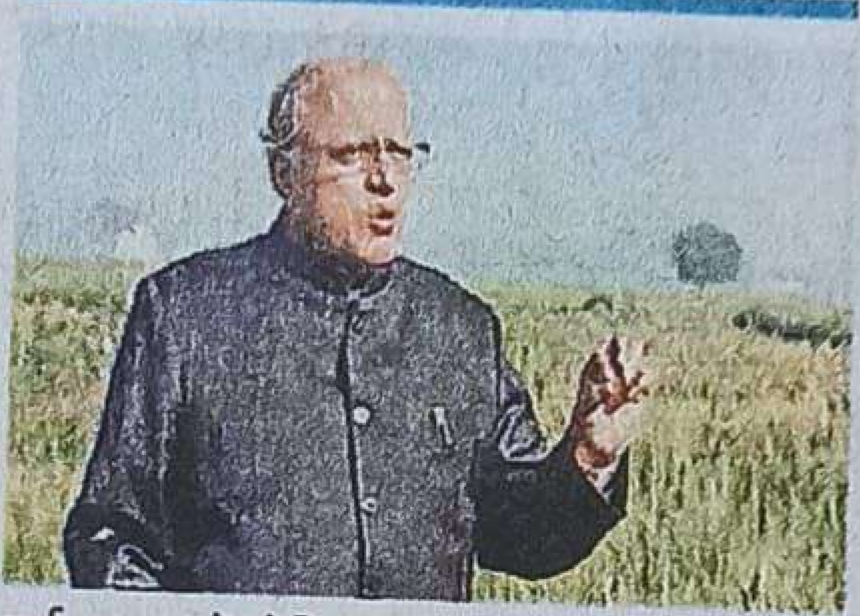

वर्ष 2013 में सेमिनार के बाद कृषि प्रक्षेत्र में निरीक्षण करते डा. स्वामीनाथन • सीएसए

Sign in to edit and save changes to this file.

अंक-330 कानपुर, शनिवार 10 फरवरी 2024 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

हिन्दी दैनिक

बिन्दकी/कानपुर देहात

वैज्ञानिक स्वामीनाथ एवं चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर जताया हर्ष

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया कि स्वामीनाथ को हरित क्रांति में उनके महत्वपूर्ण भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना गया जो भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी चरण था। जिससे फसल उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई डॉ सिंह ने बताया कि अधिक उपज देने वाली गेहूं व चावल की किस्मो को विकसित करने में स्वामीनाथ के अभूतपूर्व कार्य ने 1960 एवं 1970 के दशक के दौरान कृषि में क्रांति ला दी।इस परिवर्तन से देश खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। इस अवसर पर कुलपति ने बताया कि किसानों के कल्याण हेतु कृषि उपज के लिए उचित मूल्य और कृषि पद्धतियों पर जोर दिया उन्होंने सतत कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1988 में एमएस

स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन की भी स्थापना की। कुलपति डॉक्टर सिंह ने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन केवल एक वैज्ञानिक नहीं थे वे कुशल नेतृत्वकर्ता थे जिन्होंने कृषक समुदाय के कल्याण की अथक वकालत की किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सरकार को राष्ट्रीय किसान कल्याण नीति लाने के लिए राजी किया। और किसानों को खेती की लागत पर 50 फ़ीसदी मुनाफा देकर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का भुगतान करने की सिफारिश की इससे उन्हें पूरे कृषक समुदाय का सम्मान और आभार प्राप्त हुआ। उनके योगदान को देखते हुए वे पहले भारतीय थे जो अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपींस के महानिदेशक बने।भारत सरकार के इस फैसले से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों/ शिक्षकों /अधिकारियों /छात्रों में खुशी का माहौल प्राप्त है। विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय स्थित स्वामीनाथन अतिथि गृह पर मिठाई वितरित हुई। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि स्वामीनाथ को विश्वविद्यालय में प्रथम दीक्षांत समारोह 02 मई 1982 में मानद उपाधि से विभूषित किया गया। जबकि 11 फरवरी 1989 को तीसरे दीक्षांत समारोह में वे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे उनका विश्वविद्यालय के शोध/शिक्षण एवं प्रसार गतिविधियों की गुणवत्ता में उल्लेखनीय योगदान है। इस अवसर पर निदेशक शोध डॉ पीके सिंह, निदेशक प्रसार डॉक्टर आरके यादव, अधिष्ठाता कृषि संकाय डा सी एल मौर्य, कुल सचिव डॉ पीके उपाध्याय एवं सह निदेशक प्रसार डॉक्टर पीके राठी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.

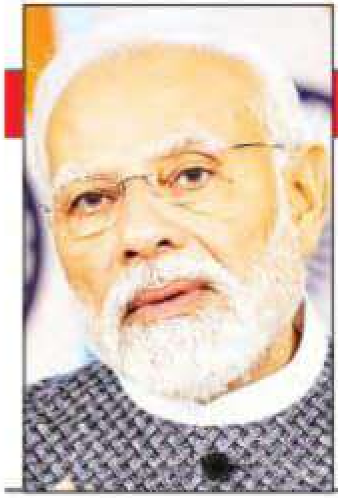

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

पीएम मोदी ने सांसदों से कहा साथ चलिए... 12

मौनी अमावस्या पर हजारों श्रद्धालुओं ने शारदा नदी... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 15 । अंक: 119
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

शनिवार । 10 फरवरी, 2024

किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर जताया हर्ष

जन एक्सप्रेस । कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया कि स्वामीनाथ जी को हरित क्रांति में उनके महत्वपूर्ण भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना गया जो भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी चरण था। जिससे फसल उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। उन्होंने बताया कि अधिक उपज देने वाली गेहूं व चावल की किस्मो को विकसित करने में स्वामीनाथन के अभूतपूर्व कार्य ने 1960 एवं 1970 के दशक के दौरान कृषि में क्रांति ला दी। इस परिवर्तन से देश खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। किसानों के कल्याण के लिए कृषि उपज के लिए उचित मूल्य और कृषि पद्धतियों पर जोर दिया। उन्होंने सतत कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1988 में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन की भी स्थापना की। कुलपति ने बताया कि डॉ.स्वामीनाथन केवल एक वैज्ञानिक ही नहीं अपितु कुशल नेतृत्वकर्ता थे जिन्होंने कृषक समुदाय के कल्याण की अथक वकालत की। किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सरकार को राष्ट्रीय किसान कल्याण नीति लाने के लिए राजी किया। और किसानों को खेती की लागत पर 50 फ़ीसदी मुनाफा देकर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का भुगतान करने की सिफारिश की। इससे उन्हें पूरे कृषक समुदाय का सम्मान और आभार प्राप्त हुआ।

उनके योगदान को देखते हुए वे पहले भारतीय थे जो अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपींस के महानिदेशक बने।भारत सरकार के इस फैसले से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, शिक्षकों, अधिकारियों, छात्रों में खुशी का माहौल है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय स्थित स्वामीनाथन अतिथि गृह पर मिठाई वितरित हुई। डॉ.खलील खान ने बताया कि स्वामीनाथन को विश्वविद्यालय में प्रथम दीक्षांत समारोह 02 मई 1982 में मानद उपाधि से विभूषित किया गया। जबकि 11 फरवरी 1989 को तीसरे दीक्षांत समारोह में वे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। उनका विश्वविद्यालय के शोध/शिक्षण एवं प्रसार गतिविधियों की गुणवत्ता में उल्लेखनीय योगदान है। इस अवसर पर निदेशक शोध डॉ.पी.के.सिंह, निदेशक प्रसार डॉ.आर.के.यादव, अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ.सी.एल.मौर्य, कुल सचिव डॉ.पी.के.उपाध्याय एवं सह निदेशक प्रसार डॉ.पी.के.राठी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

email: shahardayaranews@gmail.com
दैनिक
शहर दायरा न्यूज
हिन्दी/अंग्रेजी द्विभाषीय
https://www.facebook.com/shahardayaranews/
वर्ष 9 अंक: 175 कानपुर, शनिवार 10 फरवरी 2024 पृष्ठ: 8 मूल्य-2.00 ₹

वैज्ञानिक स्वामीनाथ एवं चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर जताया हर्ष

शहर दायरा न्यूज

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया कि स्वामीनाथ को हरित क्रांति में उनके महत्वपूर्ण भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना गया जो भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी चरण था। जिससे फसल उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई डॉ सिंह ने बताया कि अधिक उपज देने वाली गेहूं व चावल की किस्मो को विकसित करने में स्वामीनाथ के अभूतपूर्व कार्य ने 1960 एवं 1970 के दशक के दौरान कृषि में क्रांति ला दी इस परिवर्तन से देश खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। इस अवसर पर कुलपति ने बताया कि किसानों के कल्याण हेतु कृषि उपज के लिए उचित मूल्य और कृषि पद्धतियों पर जोर दिया उन्होंने सतत कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1988 में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन की भी स्थापना की। कुलपति डॉक्टर सिंह ने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन केवल एक वैज्ञानिक नहीं थे वे कुशल नेतृत्वकर्ता थे जिन्होंने कृषक समुदाय के कल्याण की अथक वकालत की किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सरकार को राष्ट्रीय किसान कल्याण नीति लाने के लिए राजी किया। और किसानों को खेती की लागत पर 50 फ़ीसदी मुनाफा देकर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का भुगतान करने की सिफारिश की इससे उन्हें पूरे कृषक समुदाय का सम्मान और आभार प्राप्त हुआ। उनके योगदान को देखते हुए वे पहले भारतीय थे जो अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपींस के महानिदेशक बने।भारत सरकार के इस फैसले से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों/ शिक्षकों /अधिकारियों /छात्रों में खुशी का माहौल प्राप्त है। विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय स्थित स्वामीनाथन अतिथि गृह पर मिठाई वितरित हुई। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि स्वामीनाथ को विश्वविद्यालय में प्रथम दीक्षांत समारोह 02 मई 1982 में मानद उपाधि से विभूषित किया गया। जबकि 11 फरवरी 1989 को तीसरे दीक्षांत समारोह में वे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे उनका विश्वविद्यालय के शोध/शिक्षण एवं प्रसार गतिविधियों की गुणवत्ता में उल्लेखनीय योगदान है। इस अवसर पर निदेशक शोध डॉ पीके सिंह, निदेशक प्रसार डॉक्टर आरके यादव, अधिष्ठाता कृषि संकाय डा सी एल मौर्य, कुल सचिव डॉ पीके उपाध्याय एवं सह निदेशक प्रसार डॉक्टर पीके राठी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

वैज्ञानिक स्वामीनाथ एवं चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर जताया हर्ष

समाज का साथी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने हरित क्राति के जनक एमएस स्वामीनाथन एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया कि स्वामीनाथ को हरित क्राति में उनके महत्वपूर्ण भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना गया जो भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी चरण था। जिससे फसल उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। डॉ सिंह ने बताया कि अधिक उपज देने वाली गेहूं व चावल की किस्मो को विकसित करने में स्वामीनाथ के अभूतपूर्व कार्य ने 1960 एवं 1970 के दशक के दौरान कृषि में क्राति ला दी।इस परिवर्तन से देश खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। इस अवसर पर कुलपति ने बताया कि किसानों के कल्याण हेतु कृषि उपज के लिए उचित मूल्य और कृषि पद्धतियों पर जोर दिया। उन्होंने सतत कषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1988 में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन की भी स्थापना की। कुलपति डॉक्टर सिंह ने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन केवल एक वैज्ञानिक नहीं थे। वे कुशल नेतृत्वकर्ता थे जिन्होंने कृषक समुदाय के कल्याण की अथक वकालत की। किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सरकार को राष्ट्रीय किसान कल्याण नीति लाने के लिए राजी किया। और किसानो को खेती की लागत पर 50 फ़ीसदी मुनाफा देकर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का भुगतान करने की सिफारिश की। इससे उन्हे पूरे कृषक समुदाय का सम्मान और आभार प्राप्त हुआ। उनके योगदान को देखते हुए वे पहले भारतीय थे जो अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपिंस के महानिदेशक बने।भारत सरकार के इस फैसले से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको/ शिक्षको /अधिकारियो /छात्रो मे खुशी का माहौल प्राप्त है।

स्वामीनाथन एवं चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर सीएसए में खुशी की लहर

कानपुर, 9 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया कि स्वामीनाथ को हरित क्रांति में उनके महत्वपूर्ण भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना गया जो भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी चरण था। जिससे फसल उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। डॉ सिंह ने बताया कि अधिक उपज देने वाली गेहूं व चावल की किस्मो को विकसित करने में स्वामीनाथ के अभूतपूर्व कार्य ने 1960 एवं 1970 के दशक के दौरान कृषि में क्रांति ला दी।इस परिवर्तन से देश खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। इस अवसर पर कुलपति ने बताया कि किसानों के कल्याण हेतु कृषि उपज के लिए उचित मूल्य और कृषि पद्धतियों पर जोर दिया। वर्ष 1988 में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन की भी स्थापना की। कुलपति डॉक्टर सिंह ने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन केवल एक वैज्ञानिक नहीं थे। वे कुशल नेतृत्वकर्ता थे विश्व विद्यालय के प्रसार निदेशालय स्थित स्वामीनाथन अतिथि गृह पर मिठाई वितरित हुई। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डा. खलील खान ने बताया कि स्वामीनाथ को विश्वविद्यालय में प्रथम दीक्षांत समारोह 02 मई 1982 में मानद उपाधि से विभूषित किया गया। जबकि 11 फरवरी 1989 को तीसरे दीक्षांत समारोह में वे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

सं.ए-12034/2/2024-पीएमएसएसवाई-IV
भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(पीएमएसएसवाई प्रभाग)
कमरा नं० 201-डी,निर्माण भवन,
नई दिल्ली - 110011

(i) गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) एवं (ii) मनेठी (हरियाणा) प्रत्येक एम्स (एआईआईएमएस) में अधिशासी निदेशक के पद हेतु विज्ञापन -

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय(पीएमएसएसवाई प्रभाग), आल इण्डिया इन्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (एआईआईएमएस) (i) गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) तथा(ii) मनेठी (हरियाणा) में प्रत्येक में प्रतिनियुक्ति/ अल्पकालीन संविदा/ संविदा आधार पर लेवल - 15, रू. 182200- 224100/- पे मैट्रिक्स (7वे सीपीसी के अनुसार) में अधिशासी निदेशक के पद को भरने के लिए सुयोग्य अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित करती है। अधिक विवरण हेतु, कृपया मंत्रालय के वेबसाईट तथा प्रभाग के वेबसाईट: https://main.mohfw.gov.in तथा https://pmssy.mohfw.gov.in का अवलोकन करें।

विस्तृत विज्ञापन इम्प्लामेण्ट न्यूज में प्रकाशित होगा। आवेदन पत्र के प्राप्ति की अन्तिम तिथि इम्प्लामेण्ट न्यूज में विज्ञापन के प्रकाशन की तिथि से 45 दिन होगी।

ह०/-
(दिनेश कुमार)
संयुक्त निदेशक,
टेली: 011-23061730

सीबीसी 17101/11/0016/2324

दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....
WWW.nagarchhaya.com

स्वामीनाथन व चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर सीएसए में खुशी की लहर

कानपुर (नगर छाया समाचार)। कृषि वैज्ञानिक स्वामीनाथन जी एवं चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर सीएसए में खुशी की लहर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया कि स्वामीनाथन जी को हरित क्रांति में उनके महत्वपूर्ण भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना गया जो भारतीय कृषि में परिवर्तनकारी चरण था। जिससे फसल उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। डॉ सिंह ने बताया कि अधिक उपज देने वाली गेहूं व चावल की किस्मो को विकसित करने में स्वामीनाथ जी के अभूतपूर्व कार्य ने 1960 एवं 1970 के दशक के दौरान कृषि में क्रांति ला दी।इस परिवर्तन से देश खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। इस अवसर पर कुलपति ने बताया कि किसानों के कल्याण हेतु कृषि उपज के लिए उचित मूल्य और कृषि पद्धतियों पर जोर दिया। उन्होंने सतत कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1988 में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन की भी स्थापना की। कुलपति डॉक्टर सिंह ने बताया कि डॉक्टर स्वामीनाथन केवल एक वैज्ञानिक नहीं थे। वे कुशल नेतृत्वकर्ता थे जिन्होंने कृषक समुदाय के कल्याण की अथक वकालत की। किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सरकार को राष्ट्रीय किसान कल्याण नीति लाने के लिए राजी किया। और किसानों को खेती की लागत पर 50 फीसदी मुनाफा देकर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी का भुगतान करने की सिफारिश की। इससे उन्हें पूरे कृषक समुदाय का सम्मान और आभार प्राप्त हुआ। उनके योगदान को देखते हुए वे पहले भारतीय थे जो अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपींस के महानिदेशक बने।भारत सरकार के इस फैसले से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों/ शिक्षकों /अधिकारियों /छात्रों में खुशी का माहौल प्राप्त है। विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय स्थित स्वामीनाथन अतिथि गृह पर मिठाई वितरित हुई। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि स्वामीनाथन जी को विश्वविद्यालय में प्रथम दीक्षांत समारोह 02 मई 1982 में मानद उपाधि से विभूषित किया गया। जबकि 11 फरवरी 1989 को तीसरे दीक्षांत समारोह में वे मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। उनका विश्वविद्यालय के शोध/शिक्षण एवं प्रसार गतिविधियों की गुणवत्ता में उल्लेखनीय योगदान है। इस अवसर पर निदेशक शोध डॉ पीके सिंह, निदेशक प्रसार डॉक्टर आरके यादव, अधिष्ठाता कृषि संकाय डा सी एल मौर्य, कुल सचिव डॉ पीके उपाध्याय एवं सह निदेशक प्रसार डॉक्टर पीके राठी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।